आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र में मौलिक उद्भावनाएं

डॉ0 बीनू सिंह

काव्यशास्त्र की प्राचीन परम्परा में भरत, भामह दण्डी आदि आचार्यों के द्वारा रचित ग्रन्थों में उनकी मौलिक उद्भावनाओं को लेखनी बद्ध करने के पश्चात् उन्ही का व्याख्यान प्रत्याख्यान होता रहा है। आधुनिक आचार्यो ने संस्कष्त काव्य शास्त्र की रचनाधार्मिता को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। आधुनिक आचार्यो ने पूर्वाचार्यो के प्रति श्रद्धाभाव से संस्कृत काव्य शास्त्रीय चिन्तन को उपस्थापित किया। इन आचार्यो के प्रतिपादन में मौलिकता भी दृष्टिगत होती है। आधुनिक आचार्यो ने काव्य शास्त्रीय सिद्धान्तों को नये कलेवर में स्थापित करने का सत्प्रयास किया है।